International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070, Impact Factor: RJIF 5.22
www.socialresearchjournals.com
Volume 2; Issue 3; March 2016; Page No. 68-78

असमीया भाषाः उत्पत्ति और विकास का संक्षिप्त परिचय

जयन्त कुमार बोरो

अस्सिटेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कोकराझार गवर्मेन्ट कॉलेज, कोकराझार, असम

शोध-आलेख सारः

पूर्वोत्तर भाषा एवं साहित्य के दृष्टोकण से असमीया भाषा का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। असमीया भाषा का सम्बन्ध भारतीय भाषा परिवार से ही है। प्राचीन काल से लकरके अब तक असमीया भाषा में विपुल साहित्य की रचना की जा चुकी है। असमीया भाषा ने भी अपने वर्तमान रुप को प्राप्त करने के लिए काफी लम्बा सफर तय करना पड़ा। असमीया भाषा उत्पति और विकास एक महत्वपूर्ण विषय को ध्वनित करता है कि हिन्दी और असमीया भाषा में काफी निकट का सम्बन्ध है। दोनों के मध्य जो वियाप्त अज्ञानता की खाई को समाप्त किया जा सकता है। उच्चारण के दृष्टिकोण हिन्दी और असमीया में काफी अन्तर है। असमीया भाषा के विकास में प्राचीन असमीया साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। प्रस्तुत आलेख में उक्त भाषा की संक्षिप्त रुप से विकास की रुपरेखा को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया हैं।

खोजशब्दः असमीया भाषा, उत्पत्ति, विकास

प्रस्तावनाः असमीया भाषा का पूर्वोत्तर के की प्रमुख भाषाओं में से एक हैं। असम के आस-पास के राज्यों मेघालय, नगालैंड, मणिपुर, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश आदि में असमीया भाषा का प्रचलन होता है। असम में विविध जाति एवं जनजातियों के मध्य सम्पर्क भाषा के रुप में जाना जाता हैं। पड़ोसी राज्य के सीमावर्ती इलाको में इसका विशेष रुप प्रयोग होता आ रहा है। विदेशी लेखक माइल्स ब्रनसन ने जिसे असमीया भाषा के प्रथम कोशकार माना जाता है। वे लिखते है कि 'असमीया भाषा प्राचीन काल से लेकर आज तक बह्मपुत्र नदी की प्रवाह की भाँति राज्य के मध्य निरन्तर प्रवाहित है और आगे भी जारी रहेगी।'

उद्देश्यः असमीया भाषा का प्रचलन एक सुदीर्घ काल से चली आ रही एक भाषा है। इस भाषा के उद्भव और विकास के सम्बन्ध में आलोचको नें विविध प्रकारो के मतों को प्रतिष्ठत करने का प्रयास किया है। कई लोगों ने इसका उद्भव कामरुपी प्राकृत से बताया औऱ कई लोगों ने मागधी आदि प्राकृतो से उद्भव स्वीकार किया। लेकिन जो भी हो असमीया भाषा का बहुत से रुप चर्यापदों में भी पाये जाने की सम्भावनाये अभिव्यक्त की गई है। इस भाषा के अध्ययन के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि असमीया भाषा का सम्बन्ध बांग्ला, चर्यापदों और मागधी जैसे अपभ्रंश से काफी निकट का रहा हैं।

शोध विधिः प्रस्तुत लेख की विषय वस्तु के अध्ययन के लिए विशलेषणात्मक पद्धति को अपनाया गया है तथा यह विषय समीक्षात्मकता पद्धति की भी मांग रखता है।

शोध सामाग्रीः प्रस्तुत आलेख की शोध सामाग्री विविध प्रकार के लेखों और साहित्य के सर्वेक्षण के आधार पर प्राप्त किया गया गया है। हिन्दी और असमीया साहित्य के विविध ग्रन्थों में से आलेख को पुरा करने के लिए काफी मद्द मिली है।

असमीया भाषा के उत्पत्ति और विकास की पृष्ठभुमिः- संसार के प्रत्येक जाति का अपना एक भाषा होता हैं जिससे उसकी जातिगत पहचान बनती है। उसी भाषा के माध्यम से उस जाति विशेष के साहित्य का भी निर्माण होता है। किसी एक जाति विशेष का साहित्य में उस जाति की आशा-आकांक्षा, आनन्द-वेदना, सौन्दर्यबोध, उत्थान-पतन, भाव, कल्पना, अभिव्यक्ति आदि की ओर लक्ष्य किया जाता है और जीवन की सम्भावनायें भविष्य में तलाश की जा सकती है। किसी भी जाति विशेष की कला-संस्कृति और समाज के आचार-विचार को समझने के लिए उनके साहित्य का अध्ययन करना अनिवार्य होता है। इसीलिए साहित्य को सामाज दर्पण कहाँ गया है।

भारत के उत्तर पूर्व प्रान्त असम की प्रधान भाषा असमीया है। असम बहु भाषा-भाषी वाला प्रान्त है जैसे- बड़ो, राभा,

कारबी, गारो, मिसिंग, आदि। ये सभी जातियाँ सम्पर्क भाषा के रुप में असमीया को ही प्रयोग में लाते है। भारतीय सम्बिधान की स्वीकृत भाषाओं में असमीया भाषा को प्रधान भाषा के रुप में गणना की जाती है। असमीया साहित्य असम के सास्कृतिक जीवन का प्रतीक है। असमीया जीवन की अभिव्यक्तियाँ, चिन्तन एवं भाव धारायें, आशा- आकांक्षा, धर्म और समाज, आचार-नीति और मानसिक प्रगति का इतिहास असमीया साहित्य में अंकित हुआ है।

वर्तमान असमीया साहित्य हजार वर्षों के क्रम और प्रतिक्रिया का फलस्वरुप हमारे सम्मुख उपलब्ध है। असमीया जाति, भाषा और साहित्य ने विविध अनुकुल और प्रतिकुल परिस्थितियों से होकर वर्तमान अवस्था को प्राप्त किया है। यदि असमीया साहित्य के इतिहास के उत्पत्ति के सन्दर्भ में खोज किया जाए तो निश्चित रुप से सर्वप्रथम इसके भाषा के जन्म को जानना आवश्यक होगा। क्योंकि पहले बोली और भाषा का आगमन होता है तत्पश्चात् साहित्य की सृष्टि होती है। बिना भाषा के साहित्य की सृष्टि असम्भव है परन्तु बिना साहित्य के भाषा रह सकता है। यहाँ भाषा का सम्बन्ध साहित्यिक भाषा से कर रहे है। देखा जाए तो असमीया भाषा आर्यभाषा से सम्बन्धित है किन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि इस भाषा की सृष्टि केवल आर्यावर्त या उत्तर भारत से आये हुए आर्या भाषा-भाषी की अपनी सृष्टि है। आर्यों के आने से पहले, मंगोलियन जाति के विभिन्न समुदाय, विभिन्न समयों में असम में प्रवेश कर बस गये थे। इनसे भी पहले *मनक्षमे समुदाय के* आस्ट्रिक भाषी वाले असम में प्रवेश कर धान और ज्वार की खेती, पशुपालन आदि करने लगे थे। पूर्व वैदिक आर्यभाषी *एदले* भी आकर बसे ऐसा कई लोगो का मानना है। अगर देखा जाए तो भारत के असम प्रान्त में आर्यों के आने से पहले अनार्यों समुदायों ने यहाँ आकर इसे अपना निवास स्थान के रुप में चुना। महाभारत, पुराण आदि प्राचीन ग्रन्थों में *प्राग्ज्योतिष* राज्य (प्राचीन असम का नाम) किरातों की भूमि के रुप में जाना जाता था। महाभारत के विभिन्न पर्वों में *भगदत्त* राजा के अनुगामी सेनाओं के वर्णन प्रसंग में किरात और चीन सेनाओं का उल्लेख मिलता है। कालिकापुराण जैसे परवर्ती ग्रंथों में भी प्राग्ज्योतिष तथा कामरुप को किरातों की वासभूमि के रुप में वर्णित किया गया है। मंगोलियन समुदाय के विभिन्न जनजातियों को पौराणिक संस्कृत साहित्य में किरात के रुप में ही वर्णित किया गया है। इम आदिम आदिवासी के सम्पर्क में जब आर्यभाषी ईसा के प्रथम शताब्दी में कई वर्षों तक आते रहे, तब वे मौखिक भाषा की पथ की और अग्रसर होते दिखते है। प्राचीन भारतीय आर्यभाषा का क्रम परिवर्तन के मध्य दसवी शताब्दी तक असमीया भाषा अपना रुप ग्रहण करना प्रारम्भ कर देते है। इसीलिए असमीया भाषा को आर्यभाषा के रुप में स्वीकार किया जाता है। लेकिन एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि *असमीया भाषा आर्याभाषा से उद्भव होने के बावजूद इसके पृष्ठभूमि में असम में वर्षों से अधिवास कर रहे अनार्यों की भाषा के प्रभाव से ये पूर्ण रुप से मुक्त न हो सका। असमीया भाषा में अनार्यों जैसे तिब्बत वर्मी- आस्ट्रिक भाषा का प्रभाव भी देखा जा सकता है।* असमीया शब्दावली में कुछ कुछ अनार्यों की भाषा का शब्द भी देखने को मिलता है जैसे- कुछ नदी के नाम, जगहों के नाम, कुछ घरेलु शब्द आदि। उपसर्ग के प्रयोग में भी एक दो शब्द अनार्यों की भाषा से आये है तथा असमीया भाषा के उच्चारण और ध्वनि विकास में भी अनार्यों की भाषा का प्रभाव परिलक्षित होता है।

इतने में हमारे भीतर एक प्रश्न उत्पन्न होता है कि दसवीं और ग्यारहवीं शताब्दी में असमीया भाषा की उत्पत्ति होती है तो उसके पहले असम में कौन सी भाषा और साहित्य प्रचलित रहा? दसवीं शताब्दी या उससे पहले भाषा की बात करे तो हमारे हाथ प्राचीन *शिलालिपि* और *ताम्रलिपि* लगती है। इसमें लिपि बद्ध भाषा संस्कृत थी। संस्कृत ही एकमात्र उस समय की राज काज की भाषा थी। राजकीय कार्य या राजदरवारी परिवेश के बाहर आम जनता कुछ अंशो तक हो सकता है कि कुछ प्राकृत भाषा का और कुछ आर्य भाषा का प्रयोग किया करता था। यह भी हो सकता है कि जो आर्य संस्कृति और भाषा को ग्रहण न करने वाले अनार्यों जातियों ने अपनी बोली और उपभाषा को आम जीवन में प्रयोग किया होगा। उपरोक्त बातें हमारे सामने एक धारणा का रुप लेती है। शताब्दी से पूर्व कुछ वर्षों तक प्राचीन कामरुप में आर्यों का आगमन प्रारम्भ हो चुका था। लेकिन उस समय आर्यों भाषी संख्या में कम थे तथापि उनकी भाषा का शक्तिशाली रुप और समृद्ध संस्कृति के कारण वे जल्दी ही अपने को स्थापित करने में सक्षम सिद्ध हुये।

प्राचीन कामरुपी राजाओं की पृष्ठभूमि में आर्यो की संस्कृति और भाषा, उच्च श्रेणी से लेकर आम जनता के मध्य तक प्रवेश करने में सफल हो चुके थे। ऐतिहासिक राजाओं के प्रसंग को छोड़ भी दिया जाये, तो पौराणिक राजाओं जैसे *नरकासूर* और *भगदत्त* जैसे *असूर* और दानव वंशज के राजाओं ने आर्यों के धर्म को पुष्ट पोषण किया करते थे। नरकासूर ने ब्रहमाणों की प्रतिष्ठा किया था ऐसा उल्लेख हमें कालिकापुराण में मिलता है। कालिकापुराण और ताम्रलिपि में भगदत्त को तरकासुर का पुत्र बताया गया है। परन्तु इस प्रसंग में महाभारत तत्थस्थ है। महाभारत के अनुसार भगदत्त असुर नहीं है अपितु वे एक क्षत्रिय राजा थे और इन्द्र का

सखा बताया गया है। ताम्रलिपि के अनुसार भगदत्त को वर्णाश्रम धर्म का नियामक बताया गया है। तदनुरुप उनके भ्राता बज्रदत्त बाह्मण धर्म का पोषक बताया गया है। इसीलिए उनके राजकाल में आर्य भाषा का प्रचार नहीं होने पर भी, प्रचार का जो बीजरोपण हुआ था इसमें सन्देह नहीं किया जा सकता। इतिहास के पृष्ठों में स्पष्ट उद्भुत है कि सुर्यवर्मा (चतुर्थ और पंचम शताब्दी) से आरम्भ करके बारहवीं शताब्दी के धर्मपाल तक सभी कामरुप के राजाओं ने आर्यसंस्कृति का पोषण किया। कालिकापुराण के अनुसार नरकासुर सबसे पहले किरातों को दक्षिण की भगा कर कामरुप में ब्राह्मण और उच्च वर्गों की स्थापना कर ब्राह्मण्य धर्म का प्रवर्तन किया था। *आलोचको का मानना है कि रामायण, महाभारत और कालिकापुराण में वर्णित नरकासूर एक ही व्यक्ति हो यह सम्भव नहीं।* डॉ. वाणीकान्त काकति के अनुसार कालिकापुराण में उल्लेख नरकासूर ईसा पूर्व द्वितीय और तृतीय शताब्दी के ही लोग है।

इसी प्रकार ब्राह्मण धर्म का का प्रभाव और विस्तार होने के साथ-साथ आर्याभाषा की उद्भुत भाषा भी असम की प्रधान भाषा के रुप में परिगणित होने लगा। जब कभी कोई एक धर्म राजधर्म और कोई भाषा राजकीय भाषा के रुप में प्रचलित होने लगता है, तब से वह भाषा और धर्म प्रजा और राजतीय के मध्य भी प्रचलित होने लग जाता है। आरम्भिक अवस्था में आर्याभाषा बोलने वालो की संख्या कम होने पर भी राजाओं द्वारा संरक्षण देने के कारण आर्यों की धर्म और भाषा को ग्रहण करने वालो की संख्याओं में वृद्धि होने लगी थी। बाद में धीरे से आर्या भाषा जनजतियों की भाषा के सम्पर्क में आकर अपनी भाषा की सीमाओं को तोड़ द्रुत गति से परिवर्तन के पथ की और अग्रसर होने लगा। इस परिवर्तन के फलस्वरुप जिस प्राकृत का उद्भव हुआ उसे ही प्राच्य मागधी या कामरुपी प्राकृत के रुप में चिन्हित करने लगे।

छठी से बारहवीं शताब्दी के दरम्यान भूमिदान और अन्य विषयों की जानकारियों को ताम्रपत्रों में लिपिबद्ध करने के लिए संस्कृत भाषा का प्रयोग किया जाता था। ताम्रपत्रों में संस्कृत भाषा का प्रयोग तो होता था और साथ ही इस भाषा के बीच बीच में लेखक की जानकारी के बिना *कामरुपी प्राकृत* के कुछ कुछ शब्द जोड़ देते थे ऐसा उदाहरण भी देखने को मिलता है। लगभग ग्यारहवीं शताब्दी तक कामरुपी प्राकृत और अपभ्रश के मध्य असमीया भाषा के विकास की सूचना मिलने लगता है। लेकिन परवर्ती दो शताब्दी (बारहवीं और तेरहवीं) तक असमीया भाषा का विकास होता है।

असमीया भाषा की विकास धाराः-

असमीया भाषा भारतीय आर्या भाषा समुदाय के अन्तर्गत आता है। कालक्रमानुसार भारतीय आर्य भाषा समुदाय को तीन भागो में विभक्त किया गया है। जैसे-

1. **प्राचीन भरतीय आर्यभाषा (Old Indo Aryan) - 2500 ई.पू. से 500 ई.पू. तक।**
2. **मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा (Middle Indo Aryan) - 500 ई.पू. से 1000 ई. पू. तक।**
3. **आधुनिक भारतीय आर्यभाषा (Modern or New Indo Aryan) -1000 ई. पू. से वर्तमान समय तक**

प्राचीन भारतीय आर्यभाषा के अन्तर्गत वैदिक संस्कृत [1] और लौकिक संस्कृत [2] को रखा जाता है। मध्यभारतीय आर्यभाषा में पालि,[3] प्राकृत [4] और तृतीय प्राकृत [5] को ले सकते है। प्राकृतों के धर्म, प्रदेश, उसके प्रयोग, लेखन की प्रकुति के आधार पर कई भेद किये गये है। जिनमें कुछ मुख्य है- शौरसेनी, पैशाची, महाराष्ट्री, अर्धमागधी, केकय , टक्क, ब्राचड, खच आदि। तृतीय प्राकृत में अपभ्रंश और अवहट्ट को देख सकते है। अपभ्रंश (500 ई. से 1000ई.) जिसका अर्थ *गिरा हुआ* कहकर आलोचक प्रायः इसकी चर्चा करते आ रहे है लकिन कई पण्डित अपभ्रश और अवहट्ट को ही माना है और इसे आधुनिक भारतीय भाषाओं के मध्य की कड़ी कहाँ गया। और आधुनिक आर्यभाषा समुह ही तृतीय स्तर को प्रतिनिधित्व करता है। प्राचीन भारतीय आर्याभाषा ध्वनितत्व और व्याकरणगत दृष्टिकोण से परिवर्तन होकर तथा आर्योतर भाषा के द्वारा प्रवाहित होकर प्राकृत और अपभ्रंश के मध्य आधुनिक भारतीय आर्याभाषा का उद्भव हुआ। आधुनिक भारतीय भाषाओं का उद्भव विविध श्रेत्रिय अपभ्रंश से ही हुआ। इसे समझने के लिए नाचे तालिका के रुप में दर्शाया जा रहा हैः-

अपभ्रंश	***आधुनिक भाषाएँ तथा उपभाषाएँ***
1. शौरसेनी	*पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, पहाड़ी, गुजराती।*
2. केकय	*लहँदा।*
3. टक्क	*पंजाबी।*
4. ब्राचड	*सिंन्धी।*
5. महाराष्ट्री	*मराठी।*
6. मागधी	*बिहारी, बंगाली, उड़िया, असमीया।*
7. अर्धमागधी	*पूर्वी हिन्दी।*

प्राचीन भारतीय आर्या भाषा विकास की रुपरेखा निम्नलिखित रुप से भी समझा जा सकता है-

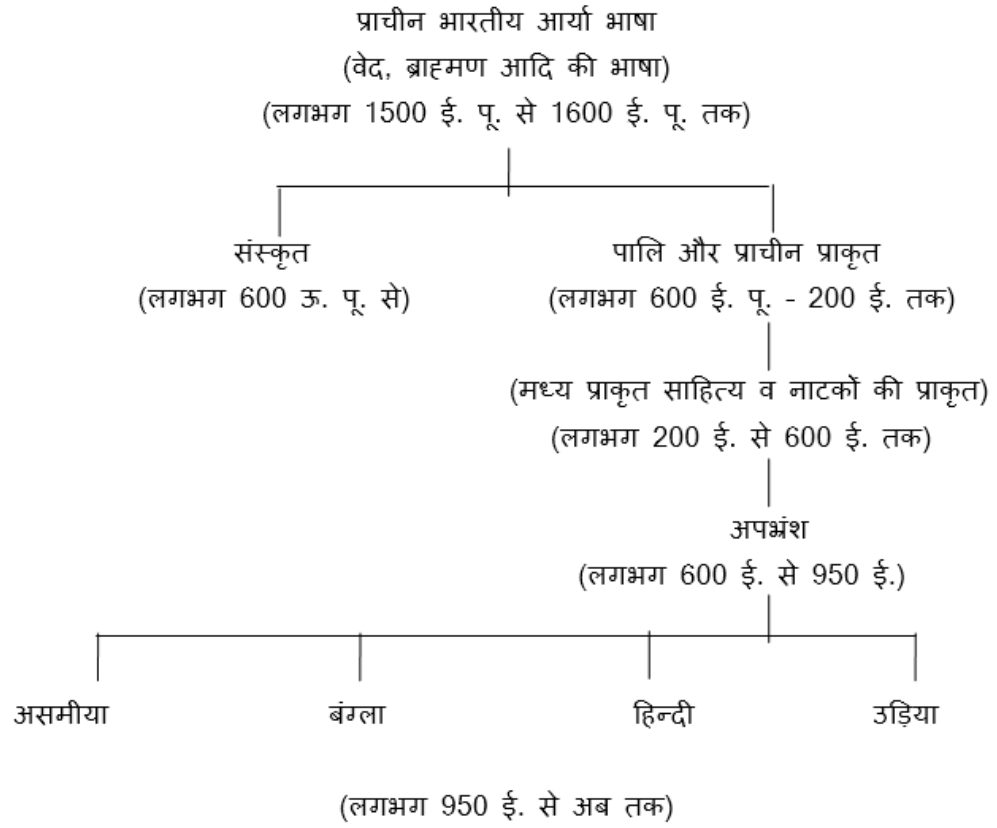

आधुनिक भातीय आर्यभाषा के अन्तर्गत भारत के विभिन्न प्रान्तों में बोली जाने वाली भाषा और उपभाषाओं को लिया गया है। जैसे- सिन्धी, लहँदा, पंजाबी, हिन्दी, गुजराती, मराठी, बंगला, असमीया, उड़िया आदि।

साधारणतः हमारी धारणा यह बनती है कि असमीया भाषा का उद्भव संसकृत के ही हुआ है। परन्तु यह धारणा शत प्रतिशत सही नहीं है। यदि भाषा का संरचना और विकास के दृष्टकोण से देखा जाए तो संस्कृत वैदिक भाषा का परिमार्जन और साहित्यिक रुप है। संस्कृत बोलने वालो आर्य भाषा-भाषी ने साहित्य, संस्कृति और साधना के बल पर प्रसिद्धि लाभ करने समर्थ हुआ। व्याकरण विद् पाणिनि [6] ने अपने व्याकरण में संस्कृत भाषा को साहित्यिक भाषा के रुप में वैज्ञानिक और उपयुक्त बताया है। वहीं दूसरी और इसे साहित्यिक भाषा का उपयोगी रुप बता कर व्याकरण की सीमा में भी बान्ध कर, इसके विकास के पथ को भी काफी हद तक अवरुद्ध कर दिया। वेद और ब्राह्मण ग्रंथो की भाषा के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण, तथा वैदिक युग की बोली जाने वाली भाषा विशेष, आर्यों के बहुत से स्थानों में प्रचलित रहा। उत्तर पश्चिम के बहुत से प्रान्तों में बोली जाने वाली आर्य भाषा को स्थापित कर संस्कृत की सृष्टि हुई। संस्कृत के अलावा भी आर्य संस्कारो से युक्त जनसाधरणों के मध्य प्रतिदिन जीवन निर्वाह के क्षेत्र में बोलचाल के रुप में असंस्कृत आर्य भाषा का प्रयोग होता था। वैदिक युग में प्रचलित आर्य भाषा क्रम से परिवर्तन को अपना कर परवर्ती युग में प्राकृत भाषा के रुप में उद्भुत हुआ। संस्कृत के विद्वानों ने इसके भाषा समुहों को प्राकृत अर्थात् जनसाधारणों की भाषा या असंस्कृत, और मूल भाषा (प्रकृति सम्बन्धी) के रुप में व्याख्या करने लगे। आम जनता के मध्य मौखिक रुप में प्रचलित होने के कारण प्राकृत भाषा और अधिक सरल रुप धारण कर अपभ्रंश में परिनत हो गया। नाटक और काव्य में पाये जाने वाले प्राकृत भाषा *साहित्यिक प्राकृत* के ही उदाहरण है।*"जनभाषा का संस्कार करके जब उसे संसकृत संज्ञा से विभुसित किया गया तो वह* जनभाषा, जो उसकी तुलना में असंस्कृत थी और पण्डितों में प्रचलित इस भाषा के विरुद्ध जो प्रकृत या सामान्य लोगो का बोली जाती थी, सहज ही प्राकृत नाम की अधिकारिणी बन बैठी। प्राकृत शब्द के दो अर्थ हैं पहले अर्थ में यह 5वीं सदी ई.पू. से 1000 ई.पू. तक की भाषा है जिनके प्रथम प्राकृत में पाली और अभिलेखी प्राकृत है। द्वितीय प्राकृत में भारत एवं भारत के बाहर प्रयुक्त विभिन्न धार्मिक, साहित्यिक अन्य प्राकृते है, तृतीय प्राकृत में अपभ्रंश एवं तथाकथित अवहट्ट

आती है। दूसरे केवल द्वितीय प्राकृत के लिए भी प्राकृत नाम का प्रयोग होता है। यहाँ प्राकृत शब्द इसी दीसरे अर्थ मे ही प्रयुक्त किया जा रहा है।" [7]

असमीया भाषा का विकासः-

भारत के एकदम पूर्वी प्रान्त को प्रतिनिधित्व करने वाली आधुनिक आर्य भाषा *असमीया* है। असमीया भाषा के विकास की प्रक्रिया को लेकर विद्वानों में एकमत नहीं है। इस विषय को लेकर कुछ विद्वानों के मतों को हम देख सकते है। जैसे-

1. भाषाविद्ध एवं आलोचको ने असमीया भाषा को *मागधी प्राकृत* से उद्भव बताया। जिसे जार्ज ग्रीयर्सन, डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी, डॉ. वाणीकान्त काकति आदि विद्वान उपर्युक्त मत का समर्थन करते दिखते है। जार्ज ग्रीयर्सन के अनुसार उत्तर-बंग और असम को उनकी भाषा बंग से नहीं मिला अपितु पश्चिम से मिला। दरअसल मागधी अपभ्रंश पूर्व दिशा में तीन भागों में विस्तृत हुआ। जैसे- उत्तर-पूर्वी दिशा में उत्तरी बंगला और असमीया, दक्षिण में उड़िया और दोनों के मध्य बंगला भाषा में रुपान्तरित हुआ था। ये तीनों के प्रत्येक का सम्बन्ध उच्च भाषा के साथ था और वहीं सब उत्तरी बंगला के उपभाषा होते हुए भी किसी विशेष कारणों में बंगला भाषा से अधिक उड़िया से मिलता है।

डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी ने जार्ज ग्रीयर्सन के मतों का समर्थन करते हुये प्राच्य मागधी और अपभ्रंश को चार भागों में विभीजित किया है-

(क) बाड़ी (अर्थात् पश्चिमबंग) - इसमें मान्या बंगला और उड़िया भाषा।

(ख) बरेन्द्री- उत्तर-केन्द्रीय बंगला।

(ग) कामरुपी- उत्तरी बंगला और असमीया।

(घ) बंगीय- पूर्व-बंग की भाषा।

कामरुपी प्राच्य अपभ्रंश से ही असमीया और उत्तर-बंग की कोचबिहार, जलपाइगुरि और रंगपुर आदि श्रेत्रों में बोले जानी वाली भाषा का उद्भव हुआ है। वास्तव में यह है कि उत्तर बंग की उपभाषाओं में औप असमीया में किसी प्राकार का भेद नहीं था। प्राचीन काल के समय में उत्तर बंग के कुछ जिले कामरुप राज्य की सीमाओं में ही सम्मिलत था और रंगपुर-कोचबिहार आदि श्रेत्र तत्तकालीन समय में असमीया साहित्य की चर्चा के केन्द्र में ही आया करता था। इतिहास से हमें यह जानने को मिलता है कि लगभग 18 वीं शताब्दी से कोचराजवंश के पतन के बाद से उत्तर बंग के श्रेत्रों का असम के साथ सास्कृतिक सम्बन्धों का विघटन होने लगने लगा था और जिससे बंगाली भाषा का प्रभाव पड़ने लगा। ब्रिटिश शासन के दौरान बंग देश में कोचबिहार, रंगपुर श्रेत्रों को मिला लिया गया और जिससे बंगभाषा और साहित्य से प्रभावित होने लगे। परवर्ती काल में उन श्रेत्रों का असम प्रान्त से पूर्ण रुप से सम्बन्ध विच्छेद होने लगा। लेकिन *डॉ. वाणीकान्त काकति* ने असमीया भाषा का जन्म मागधी प्राकृत से उद्भव हुआ स्वीकार करते है।

1. असमीया भाषा का जन्म मागधी अपभ्रंश से हुआ बताना एक कल्पना साध्य ही है, यह वास्तव तथ्य प्रतिष्ठित मत नहीं है। इस मत का समर्थन नहीं करते हुये *वेणीमाधव बरुवा, दिम्बेश्वर नेउग* आदि आलोचको ने असमीया भाषा का जन्म *कामरुपी प्राकृत* के हुआ स्वीकार किया है।
2. *कालिराम मेधि* कहते है कि असमीया भाषा मात्र मागधी प्राकृत से नहीं हुआ, बल्कि प्राच्य और पश्चिमा प्राकृत के मिश्रण से ही इसका उद्भव हुआ। उनके मत निम्नलिखित रेखा चित्र द्वारा समझा जा सकता है-

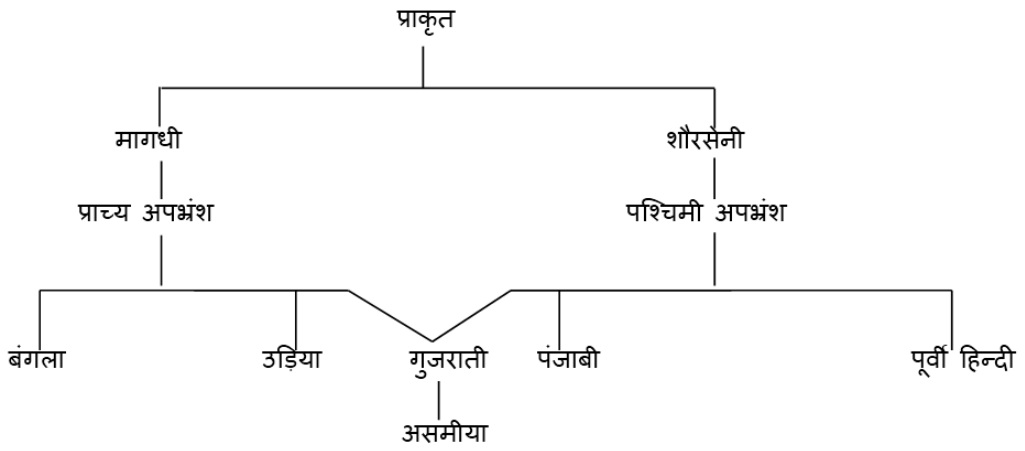

3. *भाषाविद् कनकलाल बरुवा* ने यह कहाँ है कि असमीया भाषा का जन्म पैशाची प्राकृत की तरह बहिरंग शाखा के प्राकृत से हुआ है।
4. एक अन्य भाषाविद् *देवानन्द भराली* का मानना है कि "असमीया भाषा का जन्म मागधी प्राकृत से नहीं हुआ। अपितु प्राक् वैदिक स्तर के समय में ही आये आर्यों से ब्रह्मपुत्र घाटी में दो प्राकृतों का जन्म होता है- पहला कामरुपी प्राकृत और दूसरा सौमार प्राकृत। कामरुपी प्राकृत से असम के नीचली हिस्से में बोली जाने वाली असमीया भाषा और सौमर प्राकृत से असम के उपरी हिस्से में वोली जानी वाली असमीया भाषा का उद्भव हुआ। "

उपर्युक्त मतों में से प्रथम दो का समर्थन करने वाले की संख्या ही अधिक है। कारण यह है कि कामरुपी प्राकृत के अस्तित्व और विशेषताओं के सम्दर्भ में किसी भी प्रकार के तथ्यों को प्रस्तुत नहीं कर पाया। असमीया भाषा के *तद्भव शब्दों* के *उत्पत्ति* और *विकास* के सन्दर्भ में *मागधी प्राकृत* के द्वारा व्याख्या कर दिखलाया जा सकता है। साधारणतः इसी कारण से असमीया भाषा जन्म मागधी अपभ्रंश से हुआ स्वीकार किया जाता है।

असमीया भाषा का युग विभाजनः

भारतीय आर्याभाषा का इतिहास इतना प्राचीन नहीं है। लगभग एक हजार शताब्दी के आस-पास इसका जन्म हुआ। यह माना जाता है कि असमीया भाषा का विकास भी ऐसे समय से ही होता है। इस सन्दर्भ में उपर्युक्त मतों का प्रस्ताव विद्वान हमारे सामने रखते है। लेकिन यहाँ पर हम डॉ. वाणीकान्त काकति के लेना अधिक युक्ति संगत समझते है। डॉ. काकति ने असमीया भाषा को तीन भागो में विभाजित करने का प्रयास किया हैः-

1. ***प्राचीन असमीया भाषा-*** चौदहवीं से लेकर सौलहवीं शताब्दी के अन्त तक के काल खण्ड को असमीया साहित्य के इतिहास में जिसे *प्राक् शंकरी युग और शंकरी युग* की संज्ञा से अभिहित किया गया है।
2. ***मध्य युग की असमीया भाषा-*** सत्रहवीं से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ तक के कालखण्ड को जिसे बुरंजी (अर्थात् इतिहास) और चरित साहित्य का युग माना गया।
3. ***आधुनिक असमीया भाषा-*** उन्नीसवीं शताब्दी से लेकर वर्तमान तक की साहित्यिक धाराओं को लिया गया।

लेकिन आलोचक डॉ. काकति के विभाजन को परवर्ती काल में पूर्ण रुप से दोष मुक्त नहीं माना। उनके विभाजन के अलावा भी असमीया भाषा के विकास को कुछ अन्य भागों में विभकत करके देखने का प्रयास कर सकते है। जैसेः-

1. **उद्भव काल का असमीया भाषा (7वी से 12 वीं शती तक)**
2. **प्राचीन असमीया भाषा (13 वीं से 16 वीं शती तक)**
3. **मध्यकालीन असमीया भाषा (17 वीं से 19 वीं शती तक)**
4. **आधुनिक असमीया भाषा - इसे तीन भागों में बाट सकते हैं-**

1. प्रारम्भिक काल (1846-1888 ई.)

2. मध्यकाल (1889-1939 ई.)

3. यद्धोत्तर काल (1940 ई. से अब तक)

(क) उद्भव काल का असमीया भाषाः- इसके अन्तर्गत छठवीं से लेकर चौदहवीं शताब्दी तक के भूमिदान, शिलालेख, तथा चर्यापद (8), श्रीकृष्ण कीर्तन आदि साहित्य में मिलने वाले विशेषताओं को लिया गया है। *भास्कार बर्मा* के राज्य काल में 647 ई. में चीन के यात्री *हिउवेनचां* लिखा था कि पुन-फतन-न (अर्थात् पुन्द्रवर्धन) के पूर्व की ओर से क-लो-तु (अर्थात् करतोया) नदीं पारकरके किया-मो-लुपो (अर्थात् कामरुप) में राज्य में प्रवेश किया। कामरुप राज्य के वर्णन प्रसंग के साथ असमीया भाषा के सम्बन्ध में भी विचार प्रकट किया है कि *कामरुप की भाषा मध्य भारतीय भाषा से किंचित भिन्न है।* असमीया भाषा के सम्बन्ध में यहीं एक ऐतिहासिक विचार हमको इतिहास में देखने को मिलता है। लेकिन *हिउवेनचां* के द्वारा दिये गये मत से यह स्पष्ट नहीं हो पाता है कि असल में यह भिन्नता किस दिशा की ओर इशारा करता है, ध्वनि रुप में या काव्य में या उसकी संरचना में यह स्पष्ट नहीं हो पाता है। उस समय का राजसभा की भाषा में या आम जनसाधरण में बोली जाने वाली भाषा में यह भिन्नता थी। अगर वे इस भिन्नता वाली बात को स्पष्ट कर देते तो यह असमीया भाषा के सन्दर्भ में एक ऐतिहासिक दलील होती।

5 वीं से 10 वीं शताब्दी के मध्य में असमीया भाषा के शब्दों का प्राचीनतम रुप का उदाहरण देखने को मिलता है। इस

शताब्दी के मध्य कुछ हिन्दु राजाओं के द्वारा ताम्रपत्रोम में लिखे गये लेखों में मिलता है। यद्यपि यह संस्कृत भाषा में लिखित होने के बावजूद इसके बीच-बीच संस्कृत से इतर शब्दों का प्रयोग होता था जिससे यह प्रमाणित हो जाता है कि तत्कालीन समय में आम जनसाधारण में एक ऐसे भाषा का बोलचाल के रुप में प्रयोग होता था जो संस्कृत से भिन्न थी। असम के ताम्रपत्रों और शिलालेखों में अंकित कुछ वृक्षों के नाम, मनुष्यों के नाम और देनिक जीवन में प्रयोग होने वाले शब्द मिले है जो उस समय के किसी एक प्राकृत के अस्तित्व को प्रमाणित करता है। वे शब्द है जैसे- **कुपा (কুপা), आम्ब (আম্ব), जन्टि-शनि (জন্টি শনি), ढनि कालिआ (ঢনি কালিআ), सुवर्णदारु (সুবর্ণদাৰু), जान (জান), हस्थि (হস্থি)** आदि।

असमीया भाषा के उद्भव के सम्बन्ध में कुछ तथ्य चर्यापद और श्रीकृष्ण कीर्तन में अंकित रुपों में देखा जा सकता है।

1. **चर्यापद-** महामहोप उपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री ने नेपाल दरबार में संरक्षित बौद्ध कालीन लिखित दोहों को संग्रह कर '*एहेजार बसर आगर बांगला भाषार नमुना' (এহেজাৰ বছৰ আগৰ বাংগলা ভাষাৰ নমুনা*) अर्थात् *एक हजार वर्ष के पहले का बंगला भाषा का नमुना* नाम शीर्षक से इसे प्रकाशित करवाया। यह ग्रंथ प्रकाशित होने के पश्चात् असमीया, उड़िया और मैथिली आदि समुदायों के लोगो इसे अपनी अपनी भाषा की सम्पत्ति के रुप में घोषणा करने लगे। साधारणतः चर्यापद का रचना काल लगभग पाचवीं से दसवीं शताब्दी के मध्य माना जाता है।

1.1 भाषाविदों ने चर्यापद का असमीया भाषा का सम्बन्ध दिखाने का प्रयास किया है। जैसे-

चर्या पद के शब्द	**असमीया के शब्द**
1. अमिअ (অমিঅ)	अमिया (অমিয়া)
2. कुठार (কুঠাৰ)	कुठार(কুঠাৰ)
3. खाट (খাট)	खाट (খাট)
4. गाती (গাতী)	गाता (গাতা)
5. गुहाड़ा (গুহড়া)	गोहिरि (গোহাৰি)
6. गोहाली (গোহালী)	गोहालि (গোহালি)
7. थाल (থাল)	थाल (থাল)
8. भेला (ভেলা)	भेल (ভেল)
9. षिआला (ষিআলা)	शियाल (শিয়াল)

1.2 चर्यापद के विशेषण, सर्वनाम, क्रिया आदि के बहुत से शब्द असमीया में भाषा में संस्कारित किया गया है जैसे-

1 आम्हे (আম্হে) **>** आम्हि (আম্হি) **>** आमि (আমি) (हिन्दी अर्थ हम)
2 करइ (কৰই) **>** करे (কৰে)। (हिन्दी अर्थ करना)
3 कान्दइ (কান্দই) **>** कान्दे (কান্দে)। (हिन्दी अर्थ रोना)
4 तुम्हे (তুম্হে) **>** तुम्हि (তুম্হি) **>** तुमि(তুমি)। (हिन्दी अर्थ तुम)
5 शासु (শাসু) **>** शाहु (শাহু)। (हिन्दी अर्थ सास)

1.3 असमीया भाषा में प्रयुक्त स्त्रीप्रत्यय *नी (अ.- নী)* और *ई(अ.- ঈ)* चर्यापद के साथ समान है। जैसे- शुन्डनि (শুন্ডিনী), शबरी (শবৰী) आदि।

1.4 असमीया भाषा में भूतकाल की क्रिया विभक्ति चिन्ह *इलो (अ. ইলা = हि. इलो)* चर्यापद के समान ही है। जैसे- आच्छिलो (আছ্ছিলো)।

1.5 भविष्यत् काल की क्रिया विभक्ति चिन्ह *इव* (अ. ইব = हि. इव) असमीया के समान ही है। जैसे- *करिव (কৰিব), निवास (নিবাস)*।

1.6 किसी शब्द के आसपास दो अक्षरों में व्याप्त आ ध्वनि के पूरवर्ती *आ, अ* में परिणत हो जाता हैं। लेकिन बांग्ला भाषा के साथ ऐसा नहीं होता। जैसे-

चर्या	**असमीया**	**बांग्ला**
1. पखा (পখা)	पखा (পখা)	पाखा (পাখা)
2. चका (চকা)	चका (চকা)	चाका (চাকা)

इस तरह हम देख सकते है कि चर्यापद की भाषा के असमीया के काफी निकट का सम्बन्ध है। उपर्युक्त उद्धृत उदाहरणों के द्वारा यह स्पष्ट अनुमान लगाया जा सकता है। तत्कालीन समय में असमीया, बाग्ला, उड़िया भाषाओं के उद्भव के समय का एक भाषिक रुप है। सारी भाषाओं में हमें बहुत कुछ समानतायें देखने को मिलती है।

2. श्रीकृष्ण कीर्तनः- चन्दीदास द्वारा रचित श्रीकृष्णकीर्तन की लिपि का समय राखाल दास बेनार्जी के अनुसार 1385 ई. के लगभग का है। साधारणत बांग्ला भाषी इसे बांग्ला भाषा का रुप मानते है। भाषा की सुक्ष्म दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह असमीया भाषा के साथ काफी निकट का सम्बन्ध परिलक्षित होता है। इसके रुप और ध्वनि के एकरुपता में भी काफी समानतायें है। यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यदि *श्रीकृष्ण-कीर्तन* असमीया और बांग्ला भाषा के उद्भव के पूर्व

की रचना है, तो निश्चित रुप से असमीया और बांग्ला भाषा का जन्म इसी भाषा से हुआ होगा।

श्रीकृष्ण कीर्तन के भाषा रुप	**असमीया**
तपत (তপত)	तपत (তপত)
परान (পৰান)	परान (পৰান)
जतन (জতন)	यतन (যতন)
अलप (অলপ)	अलप (অলপ)

श्रीकृष्ण कीर्तन की भाषा में तत्कालीन कामरुपी भाषा के बहुत से रुप देखने को मिलता है। जैसे-

श्रीकृष्ण कीर्तन के भाषा रुप	**चर्यापद के रुप**	**कामरुपी भाषा रुप**
आम्बड़ा (আম্বড়া)		आम्रा (আম্রা)
आर (আৰ)		आर (আৰ)
भोजपात (ভোজপাত)		भोजपात (ভোজপাত)
गेल (গেল)	गेल (গেল)	गेल (গেল)

(ख) प्राचीन असमीया भाषा:- असमीया साहित्य के 14 वी. से 16 वीं शताब्दी तक के *पूर्व वैष्णव और वैष्णव साहित्य* में मिलने वाली विशेषताओं को इसके अन्तर्गत देखा जा सकता है। अब तक के प्राप्त ग्रंथों में से हेम सरस्वती के द्वारा रचित प्रहल्लाद चरित को ही असमीया भाषा का प्रथम ग्रंथ स्वीकार किया जाया है। इन्हें 13 वीं और 14 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में उद्भव कवि के रुप में स्वीकार किया जाता है। माधव कन्दलि, हरिबर बिप्र, और रुद्र कन्दलि आदि 14 वीं शताब्दी के अन्य कवियों में से है। इन कवियों के युग को असमीया साहित्य के इतिहास में प्राक्-वैष्णव युग (पूर्व वैष्णव युग) की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। असमीया साहित्य के वैष्णव युग का प्रारम्भ महापुरुष शंकरदेव (1449-1585 ई.) के आविर्भाव के समय से माना जाता है। इस युग के वैष्णव कवि है जैसे- शंकरदेव, माधवदेव, रामसरस्वती, अनन्त कन्दलि, और श्रीधर कन्दलि आदि है। प्राचीन असमीया साहित्य की धारा की तीसरी धारा में *मानस काव्य* को लिया जाता है। इस धारा के कवियों के श्रेणी में *मनकर*, दुर्गातर और नारायणदेव आदि आते हैं। प्राचीन असमीया साहित्य की भाषा रुप बहुत ही प्राणजल एवं बोधगम्य है जिसे हम सरलता पूर्वक अध्ययन कर सकते है। 14वीं शताब्दी में रामायण जैसे विराट स्वरुप वाले महाकाव्य की सरल भाषा में टीका-टिप्पणी की गई थी, इस बात से यह स्पष्ट होता है कि कम से कम दो-तीन वर्ष पहले से ही असमीया भाषा का पूर्ण विकास हो रहा था। प्राचीन असमीया भाषा के उदाहरण स्वरुप माधव कन्दलि [8] कृत 'रामायण' के कुछ शब्द इस प्रकार हैं-

1 जीव-जन्तुओं के सूचक शब्द- व्याघ्र, बाघ, बराह, भालुक, गर्दभ, श्रृंगाल, सिंह, गज, घोड़ा, आदि।
2 अंग-प्रत्यंग के सूचक शब्द- चक्षु, चुक, नाक, गल, कर, हात, मुख, उरु, पाव, मरि, दशन, कमर, नख, लोम, अधर, उदर, नाभि, आदि।
3 बाहन सूचक के शब्द- नाव, हस्ती, घोरा, रथ, भर, भेल आदि।
4 फल-फूल के सूचक शब्द - 1. फल- आम, जाम, जाम्ब, लेटेकु, पनियल, ताम्बुल, कण्ठाल, नारिकल, मधुफल, कमला, 2. फूल- टगर, गुटिमाली, अशोक, पलाश, नागेश्वर, कमल, मालती आदि।
5 आभूषण सूचक शब्द- मुकुट, कुण्डल, सातेसरि, हार, नेपुर, कंकण, कांचि आदि।
6 वाद्य यंत्र सूचक शब्द- शंख, ढाल, ढोल, डगर, राम-ताल, कर-ताल, टोकारि, रुद्र, वीणा, वांशी, जिजिरु, शिंगा, भेरी, खुमुचि।
7 अस्त्र-शस्त्र सूचक के शब्द- धनु, शर, वाण, खाण्डा, मषुल, गदा, आदि।

(ग) मध्य युग की असमीया भाषा: प्रातीन काल में कोच राजवंश के पतन तक असम के नीचले असम (अर्थात् नामनी अखम) में साहित्यिक गतिविधियों का केन्द्र रहा है। लेकिन इस राजवंश की पतन के बाद असमीया साहित्यका केन्द्र ऊपरी असम में होने लगा। आहोम राजवंश के समय में विविध प्रकार के इतिहासप और विविध विषयों पर ग्रंथ लिखा जाने लगा। इन ग्रन्थों में भाषा क् विविध विकसित रुप के देखा जा सकता है।

1.1 ***कथा-गुरुचरित*** **-** 17 वीं शताब्दी में रचित ग्रन्थ *कथा- गुरुचरित* की भाषा असमीया भाषा के अध्ययन के क्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण भूमिका रखता है। तत्कालीन समय में असमीया साहित्य का केंन्द्र वे सारे वैष्णव सत्र समुह होने के कारण जनसाधरण की बोलचाल की भाषा में साहित्यिक का प्रवेश होने लगा था। *कथा- गुरुचरित में प्रयुक्त शब्दों की और ध्यान दिया जाये तो इसमें तत्सम शब्दों का प्रयोग किया गया है। कथा- गुरुचरित में प्रयुक्त* तत्सम शब्दों के उदाहरण

इस प्रकार है- गो, वस्त्र, रजत, सदा, गुरु, बन्धु, माता, आत्मा, प्राण, हवन, दान, विप्र, दधि आदि।

1.2 ***कथा-गुरुचरित*** *में पश्चिम* के बहुत से शब्दों का भी प्रयुक्त हुआ है। जैस-आता, आबु, आपी, लम्बा, सापे खाब, बाला (असमीया बालि), हानि, टोका (असमीया टका) आदि।

2. इतिहास की भाषा- असनीया भाषा में इतिहास को बुरंजी कहाँ जाता है। यह शब्द आहोमों का दिया गया है। जिसका अर्थ है- मूर्खो के शिक्षा का भण्डार। आहोम राजवंशजों का बुरंजी के माध्यम से असमीया साहित्य में काफी योगदान दिया है। सबसे पहले बुरंजी की भाषा आहोम की भाषा में लिखा गया था, लेकिन बाद में इसे असमीया भाषा में लिखा गया। असम का इतिहास के सम्बन्ध में लिखे गये सबसे प्रीचीन ग्रंथ है- पुरनि असम बुरंजी (अर्थात् प्राचीन असम का इतिहास)।

बुरंजी की भाषा में मिलने वाले विशेषतायें है जैसे-

1. *पाछे, बोले,* आदि शब्दों के द्वारा वाक्य का प्रारम्भ किया गया है।
2. *आ, इया, ऊवा* प्रत्यय का प्रयोग नामधातु के लिये किया गया।
3. चन्द्र बिन्दु का प्रयोग दिखता है।
4. *'ने कि'* और *'नि-कि'* जैसे शब्दों का प्रयोग प्रश्न सुचक वाक्य के लिए किया गया है।

   असमीया भाषा का प्राचीन असमीया भाषा के साथ काफी कुछ समानतायें परिलक्षित होती है।
5. आहोम में प्रचलित टाइ शब्द - बुरंजी, कारें, चकलं, माइहां, मैदाम, हेदाङ, आदि असमीया में प्रयोग होने लगा।
6. इस का के बुरंजियों में तत्सम, अर्धतत्सम, तद्भव, देशी, विदेशी शब्दों के साथ अन्य जनजातियों के शब्द भी प्रयुक्त हुआ हैं। जैसे- 1. तत्सम शब्द- दधि, घृत, दैवज्ञ, वैद्य, भार्या, क्न्या, तीर्थ, दान-दक्षिणा आदि। 2. अर्धतत्सम शब्द- मुकुता, बरिषण, घरिणी, आदि। 3. तद्भव शब्द- हाती, घोंरा, गाहरि, बामुन, तेली, धोबा, चमार, कटारी धान, चाउल, चूण आदि। 4. विदेशी शब्द- गोलाम, फौज, नाबाब, रुपीया, खाजाना, खोदा, कोराण, सलाह, तरफ, पयदा, दुसमन, नेमाज आदि।

3. आधुनिक युग की असमीया भाषा: भारत में ब्रिटिश शासन के प्रारम्भिक से लेकर वर्तमान तक इसे दो भागों में विभाजित करके देखा जा सकता है। जैसे- अरुणोदय स्तर, और जोनाकी स्तर। सन् 1826 ई. ब्रिटिश शासन काल के दौरान असम को मिला लेने के बाद से परिवर्तन की धारा प्रवाहित होने लगती है। इसी काल से ही असमीया भाषा का विकास भी द्रुत गति से बढ़ने लगती है। इसे तीन भागों में विभक्त करके देखा जा सकता है- 1. अरुणोदय स्तर, 2. जोनाकी स्तर, 3. स्वतंत्रोत्तर युग। आधुनिक असमीया भाषा का विकास क्रीस्टन मिस्नीरियों के समय से होने लगता। छापखाना की प्रतिष्ठा, व्याकरण की रचना, और असमीया वर्ण- विन्यास के क्षेत्र एक नवीन मार्ग को अपनाया। असमीया भाषा की प्रथम पत्रिका *अरुणोदय* ने एक नया परिवर्तन लाया। अरुणोदय [9] पत्रिका में असमीया भाषा का सरलतम रुप को देखा जा सकता है। अरुणोदय युग में असमीया भाषा के दन्तय- मूर्धन्य के वर्ण- विन्यास के क्षेत्र एक नवीन पद्धति को अपनाने का प्रयास किया गया। जैसे- दन्तय वर्ण के ह्रस्व दीर्घ ध्वनि *श(শ), ष(ষ), स(স),* के स्थान पर *स(স),* और *य(য), ज(জ), झ(ঝ)* के स्थान पर ज*(জ)*, आदि भाषा के सम्बन्ध में संस्कार करने का प्रयास *अरुणोदय* युग में किया गया। आधुनिक युग मे सभी भारतीय भाषा का विकसित रुप हमें भाषा के इतिहास में देखने को मिलता है। अरुणोदय में प्रयुक्त होने वाले कुछ शब्द जैसे- जानोआरि, नोआरों, बरुआ, सिवसागर, काचारि, उतपति, छाह आदि। अरुणोदय में प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं नें असमीया भाषा के विकास में काफी योगदान दिया है। इस युग में प्रकाशित पत्रिकाओं हैं जैसे- आसाम बिलासनी (1871-83), आसाम निउस ((सन् 1882-85 ई.), आसाम बन्धु (सन् 1885-86 ई.), मौ (सन् 1886 ई.), लरा बन्ध (सन् 1888) आदि पत्रिकाओं के माध्यम से भी आधुनिक असमीया भाषा शैली की स्थापना होती है।

असमीया साहित्य के रोमान्टिक युग (सन् 1889-1940 ई.) में असमीया भाषा को एक नवीन दिशा मिलता है। इस युग में साहित्य की अन्य विधाओं में जैसे लघुकथा, उपन्यास, नाटक आदि में इसका प्रभाव नहीं पड़ा। रोमान्टिक साहित्य की क्रिया और प्रतिक्रिया कमोवेश साहित्य का लगभग सभी विधाओं में परिलक्षित होता है। किन्तु कविता के क्षेत्र में

इसका सफल रुप अधिक दिखाई पड़ता है। असमीया साहित्य की अन्य विधाओं पर लेखन कार्य तथा आधुनिक कला-कौशल रोमान्टिक युग से ही प्रारम्भ होता है। इस युग प्रमुख पत्रिका 'जोनाकी' ने भी असमीया भाषा के विकास में काफी योगदान दिया है। इस युग में प्रयुक्त कुछ शब्द है जैसे- काकत, मही, जाहाज, हुकुम आदि। इस युग के साहित्य में तत्कालीन अंग्रेजी साहित्य का भी प्रभाव दिखाई पड़ता हैं।

उपसंहारः-

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहाँ जा सकता है कि असमीया भाषा में अपने वर्तमान स्वरुप के विस्तार में काफी लम्बा सफर तय किया हैं। असमीया भाषा के विकास में प्राचीन भारतीय भाषाओं का काफी महत्वपूर्ण स्थान रहा हैं। असमीया साहित्य के इतिहास में इस बात स्पष्ट प्रमाण मिलता है कि इस भाषा का सम्बन्ध संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आदि से भी रहा हैं। आधुनिक असमीया भाषा के विकास में पत्र-पत्रिकाओं ने भी अपना योगदान दिया है। आलोचक असमीया भाषा का विकास विभिन्न प्राकृतों से हुआ स्वीकार करने के पक्ष में भी अपनी दलिलों को प्रस्तुत किया है। असमीया भाषा के प्रसंग में यह कह सकते है कि यह किसी एक सम्प्रदाय की भाषा नहीं है अपितु तत्कालीन समय की आवश्यकतानुसार प्रयुक्त की गई आम बोलचाल की भाषा मात्र थी।

पादटीकाः

1. वैदिक संस्कृत को वैदिक, वैदिकी, छन्दस भी कहा जाता है। इसका प्राचीन तम रुप ऋग्वेद में मिलता है। पाश्चात्य भाषा शास्त्रियों ने भाषिक की तुलना के आधार पर ऋग्वेद के 2 से 9 मंडलों को अधिक प्राचीन तथा 1 और 10 मंडलों को अपेक्षाकृत माना है। ऋग्वेद छन्दोवद्ध है, अतः उसे छन्दस् कहा जाता है। वैदिक सस्कृत किसी समय जनभाषा थी। यह मुख्यरुप से साहित्यिक एवं सास्कृतिक कार्यों के लिए प्रयुक्त होती थी। अतः समस्त प्राचीनतम संस्कृत वाड्मय वैदिक संस्कृत में मिलता है। *द्विवेदी, डॉ. कपिलदेव, लेखक, भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र, संस्करण 2003, प्रकाशक- विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणासी। पृष्ठ संख्या - 425.*
2. लौकिक संस्कृत को प्रायः संस्कृत भी कहा जाता है। संस्कृत का सबसे प्राचीन एवं आदि काव्य वाल्मीकी रामायण 500 ई. पू. का है। महाभारत, पुराण, काव्य, नाटक आदि ग्रन्थ 500 ई. पू. से आज तक अवछिन्न रुप से अपना गौरव स्थापित किए हुए है। यास्क, कात्यायन, पतंजलि आदि के लेखों से सिद्ध है कि ईसा पूर्व तक संस्कृत लोक-व्यवहार की भाषा थी। वही, पृष्ठ संख्या- 428.
3. तृतीय शताब्दी ई.पू. से प्रथम शती ई. तक के शिलालेख, पालि बौद्धग्रन्थ - महावंश, जातक आदि , प्राचीन जैनसूत्रों की भाषा प्रारम्भिक नाटको की भाषा, जैसे अश्वघोष के नाटको की प्राकृत, जिसके अवशेष मध्य एशिया में पाए गए हैं इसको प्रथम प्राकृत भाषा कहते है। प्राकृत प्राचीन जनभाषा है। प्रकृत्या स्वभावेन सिद्धं प्राकृतम्। प्राकृत का ही परिष्कृत रुप है अर्थात् प्राकृत से संस्कृत निकली है। पाश्चात्त्य विद्वान इस मत के प्रतिपादक है। *वही, पृष्ठ संख्या- 431-432.*
4. इसको साहित्यक प्राकृत भी कहते हैं। इस काल में प्राकृत का विकसित साहित्यिक रुप प्राप्त होता है। .....प्राकृत भाषाओं के विषय में सर्वप्रथम भरत मुनि के नाट्यशास्त्र में विचार किया गया है। उनके मतानुसार 7 मुख्य प्राकृत है और 7 गौण (विभाषा)। मुख्य प्राकृत हैं- मागधी, अवन्तिजा, प्राच्य, सूरसेनी (शौरसेनी), अर्धमागधी, बाहलीक, दाक्षिणात्य (महाराष्ट्री)। गौण 7 प्राकृतों के नाम हैं- शाबरी, आभीरी, चाण्डाली, सचरी, द्राविड़ा, उद्रजा, वनचेरी। *वही, पृष्ठ संख्या- 435.*
5. अपभ्रंश शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग आचार्य व्याडि (पंजतलि से पूर्वे कियवर्ती) और पंतजलि (150 ई.पू.) ने किया। तत्पश्चात् भर्तृहरि, भामह, दण्डी, आदि ने अपभ्रंश का उल्लेख किया।..... अपभ्रंश मे विशाल साहित्य हैं। इसमें प्रमुख रचनायें है- रविषेणाचार्य - कृत पउमचरिउ, पुष्पदंत कृत महापुराम और जसहर-चरिउ (यशोधर चरित), विद्यापति-कृत कीर्तीलता, अद्दहमाण (अब्दुर् रहमान) कृत- संदेश-राशक। अपभ्रंश को देशीभाषा, देशी, अपभ्रष्ट, अवहट्ट भी कहते है। *वही, पृष्ठ संख्या- 440.*
6. आयार्य पाणिनि विश्व के सबसे बड़े वैयाकरण है। .... अष्टाधयायी पाणिनि की सर्वोत्कृष्ट रचना है। इसमे लौकिक संस्कृत के साथ वैदिक व्याकरण भी दिया गया है। यह सूत्र-पद्धति में लिखा गया है। इसमें आठ अध्याय

है, अतः यह ग्रंथ अष्टाध्यायी पड़ा। *वहीं, पृष्ठ संख्या- 455.*

7. हिन्दी भाषा, लेखक, भोलानाथ तीवारी, *पृष्ठ संख्या- 16.*
8. माधव कन्दलि ने प्रथम असमीया रामायण का प्रणयण किया था।
9. *The name of the first Assamese Journal published in the year 1846.*

सन्दर्भ ग्रन्थः

असमीयाः

1. शर्मा, डॉ. सत्येन्द्रनाथ, लखेक, असमीया साहित्यर समाक्षात्मक इतिवृति, (नवम संस्करण 2001), प्रकाशक- प्रतिमा देवी, रिहाबारी, गुवाहाटी- 8, असम।
2. बरुवा, हेमचन्द्र, लेखक, *हेमकोष,* (प्रथम संस्करण 1900, और चोदहवीं संस्करण 2011) प्रकाशक- दिवानन्दा बरुवा, हेमकोश प्रकाशन, एम. आर. दीवान पथ, चान्दमारी, गुवाहाटी- 03, असम।

हिन्दीः

3. द्विवेदी, डॉ. कपिलदेव, लेखक, भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र, संस्करण 2003, प्रकाशक- विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणासी।
4. वर्मा, धीरन्द्र, लेखक, हिन्दी भाषा का इतिकास, संस्करण-2002, प्रकाशक- हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद- 211001.
5. तिवारी, डॉ. भोलानाथ, लेखक, हिन्दी भाषा, संस्करण-2004, प्रकाशक- किताब महल, 22-ए, सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद- 01.